लोकगीतों में फागुनिया रंग

-डॉ अन्नपूर्णा सिसोदिया

फागुन माह सिर्फ मनुष्य के हृदय में ही उत्साह और आनंद का संचार नहीं करता अपितु प्रकृति भी अपने संपूर्ण सौंदर्य से सुसज्जित हो फागुन के रंग में रंगने के लिए आतुर हो जाती है। खेतों में गेहूं, चने की फसल पकने लगती है। जंगलों में महुए की गंध मादकता भर देती है। बौरा, ये आम की मंजरियों की सुगंध बासन्ती हवा का स्पर्श पाकर स्वयं बौरा जाती है और कहीं दहकती अग्नि का भ्रम उत्पन्न करते पलाश मन को मोह लेता है।

भारत के लोकांचलों में विशेष रूप से उत्तर पश्चिम क्षेत्र में फागुन के महीनों में ऋतुराज बसंत के आते ही जब टेसू के पेड़ लाल सुर्ख फूलों से लद जाते हैं, तब वातावरण में मादकता छा जाती है और पूरा महौल फागुनी उल्लास और रोमांच से भर जाता है तब गांवों की चौपालों पर फाग की महफिलें सजने लगती हैं। ढफली, झांझ, ढोलक, खंजरी, चंग, मंजीरे जैसे वाद्ययंत्रों की ध्वनि के साथ उठते फगुआ या फाग गाते ग्रामीणों के स्वर समूचे वातावरण को फागुन की मस्ती में सराबोर कर देते हैं। दिनभर की मेहनत-मजदूरी करके शाम को जब थका-हारा किसान वापस आता है, तब फाग की महफिलों की मस्ती उसकी पूरी थकान दूर कर उसे तरो-ताजा कर देती है।

भारतीय लोकजीवन में फागुन को आनंदोत्सव के रूप में मनाने की परंपरा है। बसंत से लेकर होली तक हर गांव की चौपालों में फाग, फगुआ या फागण गीतों की धूम मची रहती है। हर हृदय रंग और उल्लास से भरा हुआ नजर आता है। फागुन की मस्ती लिए फाग गीतों में विरह, श्रृंगार, ठिठोली और वीर रस भरे गीतों के साथ गारी गीत भी खूब गाये जाते हैं। अस्सी वर्ष के बुजुर्ग हो, बच्चे, युवा या महिलाएं सब इस मस्ती में शामिल होते हैं और लोकजीवन की यही जीवंतता हमारी लोक संस्कृति की पहचान है।

फागुन के रंगीले मौसम में इन लोक-अंचलों में फागुनी बयार संग बहते फाग गीतों में ग्रामीण जनजीवन की संवेदनाएं, उनकी मौलिक अल्हड़ता, जीवन के दुख-दर्द को भुलाकर उन्हें खुशियों के रंगों में भिगा देती है। होली और फाग की बात हो तो ब्रज की होली को कैसे भुलाया जा सकता है। फागुन में राधा-कृष्ण की रासस्थली ब्रजभूमि की छवि अनूठी होती है जिसकी झलक फाग गीतों में फूट पड़ती है-

आज बिरज में होली रे रसिया
होली रे रसिया बरजोरी रे रसिया
कौना गांव के कुंअर कन्हैया,
कौना गांव की गोरी रे रसिया। आज...
नन्दगांव के कुंअर कन्हैया,
बरसाने की गोरी रे रसिया। आज....

ब्रजमण्डल तो राधा-कृष्ण की लीलास्थली रहा है किन्तु राधे और गोपियों के साथ नटखट कान्हा द्वारा होली में की गई छेड़छाड़ इस मराठी होली लोकगीत में भी बड़ी सुंदरता से दर्शाई गई है-

'खेळ असा रंगला गं / खेळणारा दंगला/ टिपरीवर टिपरी पडे/ लपून छपून गिरिधारी/ मारतो गं पिचकारी/ रंगाचे पडती सडे/ फेर धरती दिशा/ धुंद झाली निशा/ रास रंगाच्या धारात न्हाला/ असे या गोपिका म्हणतात।'

होली और कन्हैया का यह अनूठा संबंध बघेली फगुआ गीत में 'जमना के ऊंचे ऊंचे कन्हैया खेलै' और 'प्रभु राखो लाज खीचत चीर दुशासन' आदि फगुआ गीतों में भी दिखाई देता है।

अवध भगवान श्रीराम की जन्म स्थली और क्रीड़ास्थली है। राम भारतीय जनजीवन के आदर्श उनके आराध्य हैं। अवधि लोकगीतों में लोकमानस की भावनाएं, आशाएं, आकांक्षाएं व कामनाएं परिलक्षित होती हैं। राम के अपने भाइयों के साथ होली खेलने का